बाजार के बारे में नहीं सोचते हिंदी के लेखक

अगले महीने दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला शुरू हो रहा है। इस बार पुस्तक प्रेमियों को मेले में किताबों के अलावा नृत्य नाटिका का आनंद भी मिलेगा। नैशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) मेले की तैयारी में जोरशोर से लगा हुआ है। एनबीटी के नए चेयरमैन बलदेव शर्मा से ***पूनम पाण्डे*** *की बातचीत :*

Pradyut

सप्ताह का इंटरव्यू

बलदेव शर्मा

■ इस बार विश्व पुस्तक मेले में खास क्या है?

चीन हमारा गेस्ट ऑनर कंट्री है। इस बार हमारी थीम भारतीय सांस्कृतिक विरासत है और उसे पुस्तक केंद्रित करके हम प्रस्तुत करेंगे। वह सांस्कृतिक विरासत पुस्तकों में किस प्रकार प्रकट हुई है, उस तरह का पूरा थीम पैविलियन बनेगा। उसी तरह की सजावट रहेगी। हर भाषा में जो लोकप्रिय और प्रमुख पुस्तक है, जैसे बांग्ला में गीतांजलि, सिंधी में शाहरोरिशाला, इन पर आधारित नृत्य नाटिका कराएंगे। एक घंटे का कार्यक्रम हर दिन होगा। नए रूप में लोग साहित्य को जानें, इस दृष्टि से यह प्रयोग किया जा रहा है।

■ लोगों में पढ़ने को लेकर रुचि कम हो रही है। क्या वजह है?

मेरा अनुभव है कि किताबें महंगी होने की वजह से और सुदूर इलाकों में अनुपलब्ध होने की वजह से लोगों की पहुंच से बाहर है। किताबों की पहुंच शहरों तक ही ज्यादा है। दिल्ली में हर किताब मिल जाएगी लेकिन जैसे-जैसे देश के अंदर जाएंगे तो वह संख्या कम हो जाएगी। पर लोग पढ़ना चाहते हैं। अगर किताबें सही कीमत पर और उनकी पहुंच के अंदर उपलब्ध कराते हैं तो लोग बहुत उत्साह के साथ किताब खरीदते हैं। किताबें लोगों तक पहुंचे इसकी कोशिश होनी चाहिए।

■ यह आरोप रहा है कि अब तक की सरकारों ने अपने-अपने विचार को बढ़ावा देने का काम किया, चाहे महान लेखकों की किताब के जरिए या इतिहास लेखन के जरिए। क्या आप बैलेंस बनाने के लिए कोई कदम उठाएंगे?

साहित्य और लेखक को कभी बांट कर नहीं देखा जाना चाहिए। उन्हें समग्रता में देखा जाना चाहिए। साहित्य, साहित्य होता है। वह पूरे समाज की थाती होता है। उसको उसी इंटीग्रिटी के साथ देखना चाहिए। सब प्रकार के विचार, भाषाएं, साहित्य लोगों को पढ़ाया जाना चाहिए ताकि लोग ज्ञान के स्तर पर समृद्ध हों। मैं इसी सोच के साथ काम करता हूं।

■ नैशनल बुक ट्रस्ट को लेकर आपकी क्या योजनाएं हैं? आप नया क्या करने जा रहे हैं?

एनबीटी पिछले 58 सालों से काम कर रहा है और उसका एक मजबूत ढांचा है। मेरी कोशिश है कि एनबीटी देश के सुदूर इलाकों तक, गांव- क़स्बों तक पहुंचे। हमने ऐसी कोशिश की भी है। पुस्तक परिक्रमा की बसों की प्लानिंग ऐसी की है कि वह रिमोट एरिया तक जाएं। हम पुस्तक मेलों को ऐसी जगहों पर कर रहे हैं जहां पहले नहीं हुए। हमारी कोशिश है कि क्षेत्र और भाषा की सीमा से बाहर निकलकर हम सबमें एकात्मक भाव लाएं। इसलिए जरूरी है कि एक क्षेत्र का साहित्य दूसरे क्षेत्र के लोगों को पढ़ाना। त्रिपुरा में एक भाषा है काकबरक। वहां की 16-17 जनजातियों में से करीब 10 जनजातियां वह भाषा बोलती हैं। लेकिन उस भाषा के लिए बहुत काम नहीं हुआ है। हमने तय किया कि काकबरक में 10 पुस्तकें प्रकाशित करेंगे जिसका अनुबंध भी हो गया है। 5 किताबें मूल रूप से काकबरक में लिखी जाएंगी और 5 किताबें दूसरी भाषाओं से अनुवाद की जाएंगी। इसमें तमिल, मलियालम, तेलगु, हिंदी और मराठी की एक एक किताब है। एनबीटी की कोशिश है कि किसी को क्षेत्र भाषा के आधार पर अलगाव महसूस ना हो।

■ बहुत से महापुरुषों की उपेक्षा भी हुई है। उन पर ढंग से लेखन नहीं हुआ...

इस पर हमारा ध्यान है। हमने एक वीरगाथा सीरीज

> किताबों की पहुंच शहरों तक ही ज्यादा है। दिल्ली में हर किताब मिल जाएगी लेकिन जैसे-जैसे देश के अंदर जाएंगे तो वह संख्या कम हो जाएगी। पर लोग पढ़ना चाहते हैं। अगर किताबें सही कीमत पर और लोगों की पहुंच के अंदर उपलब्ध कराई जाती हैं तो लोग बहुत उत्साह के साथ किताब खरीदते हैं। किताबें सभी लोगों तक पहुंचे, इसकी कोशिश होनी चाहिए।

शुरू की है जिसमें हम परमवीर चक्र विजेता सैनिकों के बारे में लिख रहे हैं। उन सबके बारे में जानकारी उपलब्ध कराएंगे जिन्होंने जाति पंथ और विचार से ऊपर उठकर देश के निर्माण में योगदान दिया। जैसे दक्षिण में सुब्रहमण्यम भारती महान स्वाधीनता सेनानी और कवि हुए हैं। हमारी कोशिश है कि उत्तर भारत के लोग उन्हें जानें। हम विभिन्न अंचलों के बारे में जानकारी देंगे। अनुवादों के जरिए एक क्षेत्र के लोगों को दूसरे क्षेत्र के बारे में जानकारी उपलब्ध कराएंगे। यह एक बड़ा प्रोजेक्ट है। हम चाहते हैं कि लोग जानें कि हमारा भारत संपूर्ण रूप में ऐसा है।

■ इंग्लिश के राइटर सिलेब्रिटी हो जाते हैं पर हिंदी में ऐसा नहीं है...

आजादी के बाद भारतीय भाषाओं का जितना सशक्तीकरण और विकास होना चाहिए था, उसमें अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण थोड़ी कमी रही है। लेकिन अंग्रेजी लेखन का प्रारूप यूरोपीय वातावरण से जुड़ा हुआ है और किसी की किताब बेस्ट सेलर में आ गई तो वे सिलेब्रिटी बन गए। लेकिन हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में कई महान लेखक हुए हैं लेकिन उनका माइंड सेट उस तरह का नहीं होता कि मेरी किताब ज्यादा से ज्यादा बिके। यह मानसिकता के स्तर पर फर्क है। भारतीय भाषाओं का लेखक इस सोच से लिखता है कि समाज को मुझे कुछ देना है केवल एंटरटेनमेंट के लिए मैं नहीं लिख रहा हूं। मैं समाज की प्रेरणा जगाने के लिए लिख रहा हूं। तो अंतर दरअसल सोच का है।